एक क्षण भी प्रमाद मत करो

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मद के कारण अपने को भूल जाना प्रमाद है। अपने को याद करने के लिए, अपने को जानने के लिए प्रमाद नहीं करना चाहिए। समय का वेग निरन्तर चल रहा है। समय व्यतीत होता जा रहा है। यदि एक क्षण भी निरर्थक बीत गया तो समझिए कि जीवन नष्ट हो गया। इसलिए समय के मूल्य को जानकर क्षण–क्षण के महत्व को समझना चाहिए। इस संसार में अकर्ता भाव से कर्म करना चाहिए। किसी कार्य के सम्पन्न होने में अनेक कारण होते हैं। किन्तु मानव यह समझता है कि मैंने यह कार्य किया। करने वाला कोई और है मैं तो केवल एक निमित्त हूँ, यह भाव रखना चाहिए।

मन, वचन और काया से किया गया कार्य परिणाम है। परीक्षा में विद्यार्थी घण्टे तक सावधानी से परीक्षा देता है कुछ समय पश्चात् उसे परिणाम प्राप्त होता है। जो जैसा प्रश्न–पत्र हल किया है उसे उसी के अनुरूप परिणाम प्राप्त होता है। इस संसार में हम लोग जो कुछ भी प्राप्त कर रहे हैं वह पूर्व जन्म में किये हुए कर्म का परिणाम है। उसे हम न तो एक क्षण बढ़ा सकते हैं और न ही कम कर सकते हैं। उस परिणाम को हमें भोगना ही पड़ेगा। बीच बोने में हम स्वतंत्र हैं किन्तु बोने के बाद हम स्वतंत्र नहीं हैं। जैसा बोया गया है वैसा परिणाम प्राप्त होता है। इसलिए प्रमाद को छोड़कर अप्रमादी होकर कार्य करना चाहिए। सदैव सावधान रहना चाहिए।

मनुष्य को कल पर कोई कार्य नहीं छोड़ना चाहिए। कल आयेगा या नहीं इसको कौन जानता है। इसलिए जो कार्य करना है उसको तत्काल कर लेना चाहिए। कबीरदासजी ने लिखा है–

काल करे सो आज कर आज करे सो अब।
पल में प्रलय होयेगी बहुरि करोगे कब।।

इस दोहे का अर्थ है जो कार्य कल करना है उसे आज ही कर डालिये, जो आज करना है उसको अभी कर डालिये। यह संसार नाशवान् है। पल भर में प्रलय हो सकती है तो कार्य कब करोगे। समय अमूल्य है। समय को कभी बर्बाद नहीं करना चाहिए। कल कभी नहीं आता, कल किसने देखा है, आज का कार्य आज ही करना चाहिए। दिन–रात का नियोजन चौबीस घंटे में किया गया है, जिसमें बारह घंटे का दिन है और बारह घंटे की रात। प्राथमिकता के आधार पर कार्य का विभाजन करके कार्य को पूरा करना चाहिए। कुछ इसमें अपने कार्य को सही ढंग से करके सफलता प्राप्त करते है और कुछ समय के मूल्य को न समझते हुए व्यर्थ में गंवा देते है। सफलता और असफलता दो चीजे है।

सफलता समय के मूल्य का अंकन है और असफलता समय की बर्बादी। जो विद्यार्थी समय के मूल्य को समझता है, समय का सदुपयोग करता है वह उच्च पद पर प्रतिष्ठित होकर जीवन का निर्माण करता है। किन्तु जो विद्यार्थी आलस्य करके सोता ही रहता है वह जीवन में सफल नहीं हो पाता। उसके लिए कितना भी समय रहे वह समय के मूल्य को नहीं समझ पाता। अंत में यही कहता है समय कम पड़ गया। सफल विद्यार्थी के लिए यही समय पर्याप्त है और असफल विद्यार्थी के लिए अपर्याप्त। जो विद्यार्थी विद्याध्ययन नहीं करता उसके लिए समय का महत्व नहीं है। अतः समय का महत्व समझना चाहिए। सुबह शीघ्र उठना, दैनिक क्रिया को समाप्त करके समय का सदुपयोग करना और रात्रि में भी यथासमय शयन करना चाहिए।

समय का नियोजन करना जो जान जाता है उसके लिए यही समय पर्याप्त है। बड़े–बड़े उद्योगपति जो पहले बहुत गरीब थे उन्होंने समय के महत्व को समझकर उसका मूल्यांकन कर समय का सदुपयोग किये और आज राष्ट्र की आर्थिक स्थिति को सुधारने में अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे है। उनके लिए भी समय उतना ही है जितना अन्य लोगों के लिए, केवल अन्तर इतना है कि उन्होंने समय के मूल्य को समझा जीवन में आलस्य और प्रमाद कभी नहीं करना चाहिए।

जीवन में सफलता के कुछ सूत्र है– पहला है भावक्रिया। भावक्रिया का अर्थ है वर्तमान में जीना। वर्तमान समय ही सबसे मूल्यवान समय होता है। पढ़ने के समय पढ़ना, सोने के समय सोना, खेलने के समय खेलना भावक्रिया है। कार्य के साथ मन को लगाना श्रेयस्कर होता है। दूसरा है– प्रतिक्रिया विरति। किसी कार्य पर तत्काल प्रतिक्रिया नहीं प्रकट करनी चाहिए। सोच समझकर प्रतिक्रिया देनी चाहिए। मुख से निकला हुआ शब्द वाण से भी अधिक खतरनाक होता है। तीसरा सूत्र है– मैत्रीभाव। मैत्रीभाव एक अच्छा गुण है। सभी प्राणियों के साथ मित्रता करना, किसी के साथ द्वेष न करना और प्रमुदिता की भावना रखना अच्छे व्यक्ति का गुण है। चौथा सूत्र है– मितभाषण। मितभाषण का अर्थ है कम बोलना। जितनी आवश्यकता हो उतना ही बोलना चाहिए। वाणी का संयम एक बहुत बड़ा गुण है। वाणी एक अनमोल वचन है। पांचवां सूत्र है– मिताहार। मिताहार का मतलब है आवश्यकता से अधिक भोजन न ग्रहण करना। विद्यार्थी के पांच लक्षणों में एक मिताहार भी है। मिताहार करने से शरीर स्वस्थ रहता है, मन प्रसन्न रहता है।